BHAIRAV DOHA AND CHAUPAI

ॐ

श्री भैरवदेवाय नमः

मंगलाचरण

दोहा

विश्वनाथ को सुमिर मन, धर गणेश का ध्यान।
भैरव चालीस पढ़ूँ, कृपा करहु भगवान।।
बटुकनाथ भैरवभुंज, श्री काली के लाल।
कृपा करहु इस दीन पर, काशी के कोतवाल।।

।।चौपाई।।

जै जै श्री काली के लाला, सदा दास पर रहहु दयाला।
भैरव भीषण भीम कपाली, क्रोध वत्स लोचन में लाली।।
कर त्रिशूल है कठिन कराला, प्रभु गल में मुण्डन की माला
कृष्णरूप तन वर्ण विशाला, पीकर मद रहता मतवाला।।
रूद्र बटुक भक्तन के संगी, प्रेतनाथ भूतेश भुजंगी।
त्रैलतेश है नाम तुम्हारा, चक्र तुण्ड अमरेश पियारा।।
शेखर चन्द्र कपाल विराजै, स्वान सवारी पे प्रभु गाजे।
शिव नकुलेश चण्ड हो स्वामी, बैजनाथ प्रभु नमो नमामी।।
अश्वनाथ क्रोधेश बखाने, भैरो काल जगत ने जाने।
गायत्री कह निमिश दिगम्बर, जगन्नाथ उन्नत आडम्बर।।
क्षेत्रपाल दसपाणि कहाये, मंजुल उमानन्द कहलाये।
चक्रनाथ भक्तन हितकारी, कहैं त्र्यम्बक सर नर-नारी।।
संहारक सुनन्द तव नामा, करहु भक्त के पूरण कामा।
नाथ पिशाचन के हौं प्यारे, संकट मेंटहु सकल हमारे।।
कृत्यायू सुन्दर आनन्दा, भक्त जनों के काटहु फन्दा।
कारण लम्ब आप भय भंजन, नमोनाथ जय जनम नरंजन।।
हो तुम मेष त्रिलोचन नाथा, भक्त चरण में नावत माथा।
त्वं अस्तितांग रूद्र के लाला, महाकाल कालों के काला।।
ताप मोचनं अरिदल नाशा, भाल चन्द्रमा करहि प्रकासा।

BHAIRAV DOHA AND CHAUPAI

श्वेतकाल अरू लाल शरीरा, मस्तक मुकुट शीश पर चीरा।।
काली के लाला बलधारी, कहहु कहाँ तक शोभा तेरी।
शंकर के अवतार कृपाला, रहहु चकाचक पी मद प्याला।।
काशी के कोतवाल कहाओ, बटुक नाथ चेटक दिखलाओ।
रवि के दिन जन भोग लगावें, धूप दीप नैवेद्य चढ़ावे।।
दरशन करके भक्त सिहाये, मदिरा की मृदु धार पिलायें।
मठ में सुन्दर लटकत झावा, करें काज सिद्ध भैरव बाबा।।
नाथ आप का यश नहिं थोड़ा, कर में सुभग सुशोभित कोड़ा।
कटि घूँघर अति सुरमय बाजत, कंचन के सिंहासन राजत।।
नर-नारी सब तुमको ध्यावहिं, मनवांछित इच्छा फल पावहिं।
तेरा यह लघु दीन पुजारी, करे आरती सेवा भारी।।
भैरव भात आपका गाऊँ, बार-बार पद शीश नवाऊँ।
आपहि-वारे छीजन धाये, ऐलादी ने रूदन मचाये।।
बहन त्याग भाई कहँ जावे, तो बिन को मोय भात पिन्हावे।
रोये बटुकनाथ करुणाकर, गरे हिवारे मैं तब जाकर।।
दुखित भई ऐलादी बाला, तब हर का सिंहासन हाला।
समय ब्याह का जिस दिन आया, प्रभु ने तुमको तुरत पठाया।।
विष्णु कहीं मत बिलम लगाओ, तीन दिवस को भैरव जाओ।
दल पठान सब लेकर आया, ऐलादी को भात पिन्हाया।।
पूरण आश बहिन की कीन्ही, सुर्ख चुन्दरी सिर धर दिन्ही।
भात भरा लौटे गुण ग्रामी, नमो नमामी अन्तरयामी।।

दोहा

जय जय जय भैरव बटुक, स्वामी संकट टार।
कृपा दास पर कीजिए, शंकर के अवतार।।
जो यह चालीसा पढ़े, प्रेम सहित सतबार।
उस घर सर्वानन्द हो, वैभव बढ़े अपार।।

।। इति श्री भैरव चालीसा सम्पूर्ण ।।